1st Sunday of Advent - December 1, 2013

Readings:

R1: **Is 2:1-5**

R2: **Rom 13:11-14**

Gospel: **Mt 24:37-44**

कुछ साल पहले एक साप्ताहिकी पत्रिका में जल–प्रलय के बारे में एक लेख लिखा गया था। यह लेख बहुत लोगों के जीवन में निराशा लाया। उसमें लिखा गया था 2000 ई॰ में संसार में जल–प्रलय होगा। समुद्र तटीय सभी लोग पानी में डूब जायेंगे। इस लेख से प्रभावित होकर समुद्र तटीय लोग अपने घर–परिवार, जमीन–जायदाद सब कुछ छोड़कर ऊँचे जमीन की तलाश में पहाड़ी प्रदेश की ओर जाकर बसने लगे। दो हजार साल दो हजार बारह होकर अभी दो हजार तेरहवाँ साल चल रहा है। लेकिन इन तेरह सालों में सुनामी, रीठा, कैथरीन जैसे आँधी–तूफान आए, लेकिन जल–प्रलय नहीं हुई। इस साल फेलिन जैसे महातूफान ने आन्ध्र प्रदेश और उड़ीसा में तबाही मचा दिया। उत्तराखण्ड में हजारों लोग बादल फटने से बेघर हो गये, फिर भी ईश्वर ने अब तक नोहा के जमाने के जल–प्रलय से हम सबको बचाकर रखा है और हमारा विश्वास है कि पिता परमेश्वर जरूर हमें इन विनाशों से बचाये रखेगा और अपने द्वारा ही दी गयी दुनिया का अन्त नहीं करेगा।

आज के पहले पाठ में नवी ईसाया उस पर्वत की ओर जिक्र करता है जहाँ एक विशाल एवं भव्य और बहुत ही सुन्दर मन्दिर विराजमान है। वह अपने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं, 'निराश या उदास न हो, अपने अन्दर की शक्ति को जानो। ईश्वर पर विश्वास रखते हुए दृढ़ बने रहो।' येरूसलेम नगर पर्वत के ऊँचाई पर है। वह कभी विनाश नहीं होगा। इसलिए हर एक इस्रायली जनता को अपने बचाव के लिए ईश्वर के पास लौट आना होगा। वो ही उन्हें हर निराशा, दुःख–तकलीफ और गुलामी से छुटकारा प्रदान करेगा। वह अपने प्रजा के लिए एक मसीहा को भेजेगा और वो दुनिया भर के लोगों को अपनी ओर खींच लेगा या आकर्षित करेगा। इस प्रकार येरूसलेम मन्दिर आकर्षण का केन्द्र बनेगा और वह लोगों को निराशा से आशा की ओर, अंधेरे से उजाला की ओर ले चलेगा और सभी राष्ट्र के लोग उस पर विश्वास करेंगे और उसके आगमन और स्वागत के लिए

हमें तैयार रहना है।

आज के दूसरे पाठ में सन्त पौलुस रोमिया के नाम लिखा हुआ पत्र में कहते हैं हमें सतर्क रहना है और जागते रहना है। क्योंकि हमारे न्याय का दिन नजदीक आ रहा है। इसलिए संसार के विलासता से या मायाजाल से हर तरह की बुराईयों से अलग रहना है। जो भी मन–मुटाव, झगड़ा–लड़ाई और कुप्रवृत्तियाँ हैं, उनसे दूर रहना है। जब हम दिव्य ज्ञान और शक्ति देने वाले उस पर्वत की ओर देखेंगे वह हमें हमारे जीवन में दिव्य प्रकाश एवं जीवन का मार्ग तैयार करेगा। जिस प्रकार नोहा एक ईमानदार एवं सत्यनिष्ठ व्यक्ति था, उसका सारा परिवार जल–प्रलय से ईश्वर ने बचाया और दूसरी तरफ जो लोग जीवन के मौज–मस्तियों में भोग–विलास का जीवन जी रहे थे वे जल–प्रलय में नाश हो गये।

आज के सुसमाचार में येसु स्वयं अपने आगमन की बात कहते हैं। मानव–पुत्र अचानक अप्रत्याशित समय में आयेंगे। वे उनके आगमन की तुलना एक चोर के आगमन के साथ करते हैं। जिस प्रकार घर का मालिक चोर के आने का बिल्कुल विचार नहीं करता, उस समय चोर बिना सूचित किए आ जाता है, उसी प्रकार प्रभु का आगमन होगा। जब हम उसकी प्रतीक्षा नहीं करते तभी वह हमारे बीच आयेंगे। तब जो सत्कर्म किए हैं, ईमानदारी से जीवन जी रहे हैं, उन्हें मोक्ष मिलेगा। क्योंकि भौतिक जीवन के साथ–साथ हमें अपने आध्यात्मिक जीवन को भी महत्त्व देना है। अगर हमलोग अपने स्वार्थ के लिए बुराई के मार्ग पर चलते हैं तो हम उसी में नष्ट हो जायेंगे। क्योंकि यह जीवन ईश्वर के द्वारा दिया हुआ एक वरदान है। वह हमें उनके द्वारा मुफ्त में मिला है। हमने उसके लिए मेहनत नहीं किया है। हम ईश्वर की रचना हैं और यह जीवन ईश्वर के द्वारा ही हमें लीज में दिया गया है, उसे हमें उन्हें वापस लौटना है। इसलिए उनके प्रति हमें आभार प्रकट करना है साथ ही साथ हमें ईमानदारी और वफादारी से जीना है।

वचन हमें कहता है सांसारिक जीवन में डूबे हुए लोगों को प्रभु का आना कठिन साबित होगा, दुःखदायी होगा। उनके आने से लोगों के जीवन में बहुत सारी गड़बड़ियाँ आयेंगी, जिस प्रकार पुलिस को देखकर चोर का नक्शा बदलता है।

जो ईश्वरीय ज्योति से चलते हैं और सुसमाचार पर विश्वास करते हैं उनके लिए प्रभु

के आगमन का समय उचित होगा। वे अपने जीवन में आनन्द और खुशियाँ मनायेंगे।

इस दुनिया का अन्त तो हम नहीं जानते हैं लेकिन हमारा अन्त को निश्चित है। 70 या 80 साल के बाद हमारे जीवन की उल्टी गिनती शुरू होती है। वैसे ही हमारे न्याय के दिन में हमें अपने कार्य के अनुसार पुरस्कार या तिरस्कार जरूर मिलेगा।

हर एक ख्रीस्तयाग के समय हम दुहराते हैं कि ख्रीस्त मर गये, ख्रीस्त जी उठे और ख्रीस्त महिमा के साथ फिर आयेंगे यह हमारा विश्वास है और यही प्रभु का वचन है। हमारा विश्वास है कि इस दुनिया में और आने वाले जीवन में हम प्रभु से खुशियाँ पायें और अपने आप को तैयार करते हुए उस अनन्त और शान्ति देने वाले जीवन के लिए लालायित रहें।

हर ख्रीस्तयाग के समय प्रभु येसु रोटी और दाखरस के रूप में हमारे जीवन में आते हैं और वह हमें सम्पूर्ण जीवन देना चाहते हैं। जिस प्रकार उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना किया था कि जिस प्रकार पिता और वह सम्पूर्ण हैं वैसे उनके शिष्य भी जीवन में परिपूर्ण हो जायें। तो आइए आगमन के इस काल में हम प्रभु के आगमन का स्वागत करते हुए आध्यात्मिक एवं भौतिक रूप से अपने व्यक्तिगत एवं सामूहिक तैयारी करने का संकल्प करें। आमेन।

फादर बैपटिस्ट डि'सोज़ा